पाठ - 2
तौहीदे उलूहियत

الدرس الثاني - هندي
توحيد الألوهية

हर प्रकार की इबादत केवल अल्लाह के लिए की जाए। इंसान अल्लाह के साथ किसी को ऐसा साझीदार न बनाले कि उसकी इबादत करने लगे, उसकी निकटता चाहने लगे। एकेश्वरवाद का यह स्वरुप सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण और व्यापक है और इसी वजह से अल्लाह तआला ने सृष्टि की रचना की है। अल्लाह तआला फ़रमाता है : ﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾

अर्थात : मैं ने इंसानों और जिन्नातों को केवल और केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।(सूरह जारियात 56)

अल्लाह तआला ने नबियों और पैगम्बरों को इसी लिए दुनिया में भेजा और इसी लिए ग्रन्थों को अवतरित किया ताकि लोग सिर्फ और सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी को साझेदार न बनाएं अल्लाह तआला फ़रमाता है : وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ

अर्थात : आप से पहले भी जो हमने रसूल भेजे उनके तरफ भी यही वही अवतरित की कि मेरे सिवा कोई वास्तविक पूज्य नहीं, अतः तुम सब मेरी ही इबादत करो। (सूरह अल अंबिया, –25)

जब रसूलों ने मुश्रिकों को एकेश्वरवाद के इस क़िस्म की तरफ दावत दी तो उन्होंने इसे मानने से इन्कार कर दिया। अल्लाह तआला फ़रमाता है :

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا

यानी, उन्होंने कहा कि क्या आप हमारे पास इस लिए आए हैं कि हम केवल अल्लाह ही की इबादत करें और जिनको हमारे पूर्वज पूजते थे उनको छोड़ दें। (सूरह अलआराफ़, आयत–70)

इसी लिए किसी भी तरह की इबादत को अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए, किसी फ़रिषते, नबी, वली या अल्लाह के सिवा किसी और मख़लूक़ की इबादत करना सही नहीं है। क्योंकि इबादत केवल अल्लाह ही के लिए विषेश और अनिवार्य है।